Q→ बौद्ध के क्षणिकवाद की व्याख्या करें ?

Ans→ क्षणिकवाद उत्तरकालीन बौद्ध दार्शनिकों का विचार है। वे कहते हैं कि क्षणिकवाद का विचार बुद्ध के दर्शन पर आधारित है लेकिन यह सत्य नहीं है क्योंकि बुद्ध ने यह कभी नहीं कहा कि वस्तुएं क्षणिक हैं बल्कि बुद्ध ने कहा था कि वस्तुएं परिवर्तनशील हैं।

क्षणिकवादी कहते हैं एक क्षण से अधिक कोई वस्तु नहीं रहती है। सभी पदार्थ, सभी घटनाएं तथा सभी अनुभूतियां एक क्षण के लिए होती हैं। इसके मूल में महात्मा बुद्ध द्वारा प्रस्तुत 'अर्थक्रियाकारित्व' का विचार है जिसका उल्लेख उन्होंने अपनी प्रतीत्यसमुत्पाद के सिद्धांत के अन्तर्गत किया था तथा कहा था कि सत् वह है जिसमें कार्य उत्पन्न करने की क्षमता होती है।

क्षणिकवादी कहते हैं कि यदि वस्तु सत् है तो फिर उसमें कार्य उत्पन्न करने की शक्ति भी होगी और तब वह हर क्षण कार्य उत्पन्न करेगी। यह कार्य अगले ही क्षण कारण में परिवर्तित होकर पुनः किसी कार्य को उत्पन्न

कर देगा और निरन्तर यही क्रम चलता रहेगा इसीलिए क्षणिकवादी कहते हैं कि 'वस्तु की उत्पत्ति, स्थिति तथा विनाश तीनों एक ही क्षण में हो जाता है अतः वस्तुएं क्षणभंगुर हैं।

क्षणिकवाद के मूल उद्घोष —

क्षणिकवाद के दो मूल उद्घोष हैं — इदम् सर्वक्षणि-कम् तथा इदम सर्वअनात्म्।

इदम् सर्वक्षणिकम् का शाब्दिक अर्थ है कि यह समस्त जगत् क्षणिक है। जगत् में सब कुछ अनित्य है, केवल क्षणिकवाद ही नित्य है।

इदम् सर्वअनात्म् का शाब्दिक अर्थ है कि आत्मा का कोई अस्तित्व नहीं है क्योंकि मानव पांच स्कन्धों — रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार तथा चेतना का योग मात्र है जो कि सतत् परिवर्तनशील है।

उपरोक्त दोनों उद्घोषों के आधार पर ही क्षणिकवादी कहते हैं ज्ञाता तथा ज्ञेय दोनों असत् है केवल चेतना

का प्रवाह ही एकमात्र सत् है।

ह्विनयाफिद्धौ ने क्षणिकवाद को निम्न दो उपमाओं के द्वारा समझाने का प्रयास किया है —

1. दीपशिखा के माध्यम से।
2. नदी के प्रवाह के माध्यम से।

जिस प्रकार दीपशिखा एक व नित्य नही बल्कि अनेक व अनित्य है क्योंकि यह छोटी-छोटी चिंगारियों का प्रवाह मात्र है इन चिंगारियों की निरन्तरता तथा समानता के कारण हम दीपशिखा को एक तथा नित्य मान लेते हैं। उसी प्रकार हम जगत् की वस्तुओं के सन्दर्भ में एकता तथा नित्यता का आरोपण कर देते हैं, जबकि वास्तव में वे अनित्य है।

इसी प्रकार नदी भी एक तथा नित्य नहीं, क्योंकि यह अनेक छोटी-छोटी धाराओं का प्रवाह मात्र होने के कारण प्रतिक्षण परिवर्तनशील अर्थात् अनेक व अनित्य है, इसीलिए कोई भी व्यक्ति एक नदी में दो बार स्नान नही कर सकता।